Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 6, May-2019, ISSN 2230-7540

हिंदी काव्य में नारी की बदलती स्थिति

Pawan Kumar*

J.C.D. College of Education, Sirsa

सारांश - *साहित्य समाज का दर्पण और दीपक होता है' यह उक्ति जग विख्यात है। साहित्यकार युगीन समाज से प्रभावित होता है और वह साहित्य के बल पर तत्कालीन समाज को भी प्रभावित करता है। नारी भारतीय सभ्यता और साहित्य का केंद्र बिंदु रही है। हिंदी काव्य में नारी की स्थिति हमेशा से एक जैसी नहीं रही उसमें अनेक उतार-चढ़ाव आए हैं।भारतीय संस्कृति में विद्यमान धार्मिक विषमताएं,अंधविश्वासों और निरक्षरता के कारण नारी युगों युगों से उपेक्षित होती रही है।वैदिक काल में नारी को पूजा करने, यज्ञ करने और शिक्षा ग्रहण करने जैसे अनेक अधिकार प्राप्त थे। परंतु आदिकाल तक आते-आते नारी पुरुष की संपत्ति बन कर रह गई। आदिकालीन काव्य से स्पष्ट होता है कि भले ही नारी को स्वयं वर चुनने का अधिकार प्राप्त हो परंतु नारी की स्थिति समाज में इस प्रकार की थी जैसे कोई मदारी कठपुतली को अपनी उंगलियों पर नचाता है उसी प्रकार पुरुष भी जिस प्रकार चाहे नारी का शोषण कर सकता था। नारी एक ओर जहां नाथों की निंदा का पात्र बनी वही सिद्धों ने उसे केवल वासनात्मक दृष्टि से देखा।भक्ति काल में कवियों ने नारी की निंदा और प्रशंसा दोनों की है । संयमशील और मर्यादित नारी को ईश्वरीय अवतार मानते हुए उसको पूजनीय बताया है वहीं भक्ति में बाधा उत्पन्न करने वाली और वासना में लिप्त नारी को संसार के लिए त्याज्य मानते हैं। रामचरितमानस के आदर्श नारी पात्र आज भी संपूर्ण विश्व के लिए प्रेरणा स्रोत है। यशोदा के माध्यम से नारी के माता रूप का जो चित्र सूरदास ने खींचा है वह अपने आप में अनूठा है। रीतिकाल में समाज का प्रत्येक वर्ग विलासिता के रंग में रंगा हुआ था समाज में नर और नारी दोनों का नैतिक पतन हो चुका था। तत्कालीन कवि भी झूठी प्रशंसा और धन प्राप्त करने की ओर उन्मुख थे। उन्हें सामान्य जनजीवन की समस्या से कोई संबंध नहीं था। वे तो केवल कामोत्तेजक काव्य रचकर आश्रयदाताओं को प्रसन्न करने में लगे थे। नारी को केवल भोग्या रूप में देखा। आधुनिक काल तक आते-आते नारी तो केवल पुरुष की पैर की जूती बन कर रह गई। सामाजिक जागृति के कारण नारी की स्थिति में धीरे धीरे बदलाव आने लगा। आधुनिक काल में सती प्रथा जैसी कुछ विसंगतियां खत्म हुई तो कन्या-भ्रूण हत्या और बलात्कार जैसी नारी से संबंधित समस्याओं ने जन्म ले लिया। आधुनिक कवियों ने समाज का नग्न चित्र काव्य में पेश किया है जिससे नारी की दयनीय स्थिति स्पष्ट देखी जा सकती।*

----------X----------

प्रस्तावना

समाज की उन्नति एवं प्रगति में नर और नारी अपनी अहम भूमिका निभाते हैं। परंतु भारतीय समाज की सोच पितृसत्तात्मक होने के कारण नारी पुरुष की उपेक्षा, घृणा, तिरस्कार एवं शोषण का शिकार होती है। परंतु समाज द्वारा खींची गई विभिन्न लक्ष्मण रेखाओं के बावजूद नारी अपनी अस्मिता, स्वाभिमान एवं स्वतंत्र सता के लिए संघर्षरत रही है। वैदिक काल में नारी का स्थान पुरुष के बराबर था और समाज में वह पूजनीय थी।मनुस्मृति में वर्णित एक श्लोक:-

यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमंते तत्र देवता:।

यत्रैतास्तु न पूज्यंते सर्वास्त्राफला:क्रिया:।।[1]

अर्थात जिस कुल में नारी की पूजा या सम्मान होता है उस कुल में देवताओं का निवास होता है और जिस कुल में नारी का तिरस्कार होता है उस कुल में की गई सभी क्रियाएं निष्फल होती हैं।

वैदिक काल में नारी शक्ति एवं विद्या का स्वरूप मानी जाती थी।

आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक नारी की स्थिति में अनेक उतार-चढ़ाव आए। जैसे जैसे समय एवं परिवेश में परिवर्तन आया वैसे वैसे समाज में नारी की दशा और दिशा अपकर्ष की ओर अग्रसर रही।हिंदी काव्य में नारी वीरांगना, विरहिणी, कामिनी, वात्सल्य के मूर्त, भोग्या, तिरस्कृत एवं शोषित अबला आदि विविध रूपों में देखने को मिलती हैं।

www.ignited.in

आदिकालीन समाज में नारी की स्थिति कुछ अच्छी नहीं थी। समाज में जौहर पृथा, बहु-पत्नी पृथा और वेश्यावृति आदि अनेक स्त्रियों से जुड़ी रूढ़िगत विसंगतियां विद्यमान थी।आदिकालीन कवियों का नारी विषयक दृष्टिकोण इतना व्यापक नहीं था। इस कारण उनके काव्य में नारी वर्णन कम ही देखने को मिलता है।नाथपंथी स्त्री को ईश्वर प्राप्ति में बाधक मानते थे। इस कारण उन्होंने अपनी वाणी में नारी को कुलटा,कामिनी एवं बाघिनी कहकर उसकी कड़ी भर्त्सना की है। गोरखनाथ जी के अनुसार:-

दिवसै बाघणि मन मोहै राति सरोवर सोषै।

जाति बुझि ले मुरिष लायो घरि घरि बाघणी पोषै।।[2]

सिद्ध कवियों ने अपनी रचनाओं में गृहस्थ जीवन को साधना का महत्वपूर्ण अंग माना था। परंतु नारी को केवल भोग विलास की सामग्री के रूप में दर्शाया है। इनके काव्य से स्पष्ट होता है नारी की नहीं कोई अपनी सता थी और न ही कोई विशेष अधिकार।भले ही विद्यापति ने 'पदावली' में राधा कृष्ण की महिमा का गुणगान किया है। परंतु राधा के बौद्धिक सौंदर्य का वर्णन कम और शारीरिक सौंदर्य का वर्णन अधिक किया है। विद्यापति भी नारी को केवल प्रेयसी रूप में देखते हैं।रासो ग्रंथों में भी नारी को भोग विलास की वस्तु एवं पुरुष की संपत्ति के रूप में दर्शाया गया है।'पृथ्वीराज रासो' में बहु-पत्नी प्रथा एवं राजकुमारी का अपहरण कर उनसे जबरन विवाह करने की कथाएं देखने को मिलते हैं।

भक्तिकालीन समाज में इस्लामिक आक्रमणकारियों एवं निरकुंश शासक वर्ग के कारण नारी की स्थिति बद से बदतर हो गई थी। वेश्यावृत्ति,पर्दा प्रथा और सती प्रथा आदि नारियों से जुड़ी विषमताएं समाज में कोढ़ की भांति की लगी हुई थी। अधिकतर स्त्रियां कामवासना में लिप्त होने के कारण अपना सतीत्व खो चुकी थी। समाज के व्यभिचार को कम करने के लिए भक्त कवियों ने अपनी वाणी में पौराणिक आदर्श नारियों के उदाहरण प्रस्तुत किए। नाथों के प्रभाव में ज्ञानमार्गी कवियों ने विलासिनी, कामिनी एवं कुलटा नारियों की कड़े शब्दों में आलोचना की है। वासना में लिप्त नारी का चित्रण कबीरदास के शब्दों में:-

अन्न न भावै नींद न आवै, गृह बन धरै न धीर रे।

कामिन को बालम प्यारा, ज्यों प्यासे को नीर रे।।[3]

प्रेममार्गी कवियों ने नारी को ईश्वर का स्वरूप सिद्ध किया।परंतु सती प्रथा जैसी विसंगति को सूफी कवियों ने 'महानता का सूचक' सिद्ध किया। मलिक मोहम्मद जायसी के काव्य ग्रंथ 'पद्मावत' में सती प्रथा की झलक विद्यमान है:-

नागमती पदुमावति रानी। दुबो महासत सती बखानी।।

दुबौ आई चढि खाट बईठी।जौ सिवलोक परा तिन्ह डीठीं।।[4]

नारी की स्थिति में परिवर्तन राम काव्य में स्पष्ट देखा जा सकता है। तुलसीदास ने सीता, अनुसूया,कौशल्या, सुमित्रा, मंदोदरी, तारा और अहिल्या आदि नारी पात्रों के माध्यम से युगीन नारी को पतिव्रता, त्यागमयी, सहनशील एवं कर्तव्यपरायण आदि गुणों को धारण करने की शिक्षा दी है। *संतो के समान कृष्ण काव्य के कवि भी अपनी और पराई नारी से दूर रहने का उपदेश देते हैं। उनके अनुसार नारी के संबंध मिथ्या, माया के मूल और भक्ति में बाधक है।*[5] सूरदास ने नारी को हृदयहीन एवं कठोर कहा है :-

नारी सौ नर प्रीति लगावै,पै नारी तिह मन महि लावे।

नारी सगै प्रीति जो करै नारी ताहि तुरत परिहरे।।[6]

सूरदास ने काव्य में यशोदा को वात्सल्य की प्रतिमूर्ति एवं राधा को एक निष्ठ प्रेयसी के रूप में उभरा है।समाज के प्रति विद्रोह एवं क्रांति की भावना के प्रथम स्वर मीरा बाई के काव्य में मुखरित होते हैं। वह समाज की लोक मर्यादा को त्याग कर अपनी स्वतंत्र सत्ता के लिए संघर्ष करती है।

मध्ययुगीन समाज में नारी की स्थिति दयनीय हो गई थी। शासक वर्ग भोग विलास में डूबे रहते थे। उनके हरम दासियों से भरे रहते थे। युगीन कवि आश्रयदाताओं को प्रसन्न करने एवं उनकी कामवासना को उत्तेजित करने के लिए नारी के शारीरिक सौंदर्य का अतिश्योक्ति वर्णन करते थे। *रीति कवियों की दृष्टि में नारी केवल उपभोग्या थी। उनकी समझ से वन, नगर और पुर की स्त्रियों का सर्वसामान्य गुण यही था कि वह देखने मात्र से ही विवेक हर लेती थी, उनकी छायाग्राहिणी छवि से कोई पुरुष बच ही नहीं सकता था।*[7] रामचंद्रिका' में केशवदास ने नैतिकता एवं मर्यादा का पूर्ण पालन किया है।इसमें कवि ने किसी भी स्थान पर अश्लीलता का समावेश नहीं किया। चिंतामणि, कुलपति मिश्र, देव, रसलीन आदि कवियों ने नारी को 'विलासिता के सामग्री' समझते हुए उसके मांसल पक्ष के श्रृंगारिक चित्र ही अपने काव्य में उकेरे हैं। मंडन ने 'नख-शिख' रचना में नारी के अंगों, आभूषणों और वस्त्रों का श्रृंगारिक वर्णन किया। सामाजिक दृष्टि से मतिराम ने 'रसराज' ग्रंथ में नायिका भेद कर तीन प्रकार की (स्वकीया, पर-कीया,सामान्य नायिका) नायिकाओं

www.ignited.in

का वर्णन किया। श्रृंगारिक कवियों के अनुसार पतिव्रत धर्म का पालन और पति मन को लुभाने वाली नायिका ही सर्वश्रेष्ठ है।रीतिकालीन काव्य में नारी की स्थिति 'विलासिनी प्रेमिका' के रूप में उभर कर सामने आती है। कवियों ने माता, देवी, गृहिणी आदि नारी के अन्य रूपों के प्रति उदासीन रवैया रखा।

आधुनिक काल को सामाजिक जागृति का काल भी कहा जा सकता है। राजा राममोहन राय,स्वामी विवेकानंद, महात्मा गांधी, दयानंद सरस्वती,आदि समाज सुधारकों ने सामाजिक रूढ़ियों का खंडन करते हुए नारी के अधिकारों की मांग उठाई। इन्ही समाज सुधारकों की शिक्षा के प्रभाव से नारी की स्थिति में परिवर्तन आया। भारतेंदु मंडल के कवियों ने सती प्रथा,बाल विवाह का विरोध किया और नारी शिक्षा,विधवा विवाह का समर्थन कर नवीन सामाजिक चेतना का उद्घोष किया। भारतेंदु बाबू और राधाचरण गोस्वामी के काव्य में रीतिकालीन श्रृंगारिकता के अंश भी विद्यमान है। जिससे नारी के प्रेयसी रूप की झांकी प्रस्तुत होती है लेकिन काव्य में अश्लीलता का समावेश नहीं होने दिया। द्विवेदी युगीन कवि हरिऔंध जी ने 'प्रियप्रवास' में राधा को समाज कल्याण का उत्तरदायित्व देकर नारी के प्रति श्रद्धा भाव को प्रकट किया। मैथिलीशरण गुप्त ने 'साकेत' और 'यशोधरा' महाकाव्य में उपेक्षित नारी पात्रों के जीवनादर्शों का वर्णन किया। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने नारी को 'अबला' बताकर नारी जाति के प्रति संवेदना और सहानुभूति प्रस्तुत की। सुभद्रा कुमारी चौहान ने 'झांसी की रानी' कविता में नारी को वीरांगना रूप में प्रस्तुत कर उसके साहस और शौर्य का व्याख्यान किया है। इनका काव्य देश प्रेम और निःस्वार्थ बलिदान की भावना से ओतप्रोत है। सुभद्रा कुमारी के शब्दों में :-

सबल पुरुष यदि भीरु बनें,तो हमको दे वरदान सखी

अबलाएं उठ पड़े देश में,करें युद्ध घमासान सखी।।

पन्द्रह कोटी असहयोगिनियाँ दहला दें ब्रह्मांड सखी।

भारत लक्ष्मी लौटने को रच दे लंका कांड सखी।।[8]

छायावादी कवियों ने नारी को सहचरी, माता, देवी आदि रूपों में देखा और उसकी महिमा का गुणगान किया । महादेवी वर्मा के काव्य में विरह वेदना का वर्णन मिलता है। सुमित्रानंदन पंत और सूर्यकांत त्रिपाठी निराला ने पुरुष द्वारा प्रताड़ित नारी को मुक्त करने का आह्वान किया है। 'नारी तुम केवल श्रद्धा हो' कहने वाले कवि जयशंकर प्रसाद ने नारी के प्रति आस्था प्रकट करते हुए उसे कला, नृत्य, साहित्य और संगीत की प्रेरणा स्रोत के रूप में प्रस्तुत किया है।प्रगतिवादी काव्य में नारी की स्थिति में बदलाव आया।अब तक कवियों द्वारा नारी के रूप को जहां कोरी कल्पना और आदर्शवाद के धागों द्वारा बुना गया था उसे केदारनाथ,नागार्जुन,सूर्यकांत त्रिपाठी निराला और त्रिलोचन जैसे कवियों ने यथार्थ के धरातल पर उतारा।स्त्री के समक्ष आने वाली समाजिक और आर्थिक समस्याओं का यथार्थ चित्रण किया।*रामवृक्ष बेनीपुरी ने अपनी 'नई नारी' में आधुनिक नारी भावना संबंधी परिवर्तन (जिसमें नारी ने घुंघट को उलट दिया है,पर्दे को फाड़ फेंका है ,प्राचीरों को ध्वस्त तथा बंधनों को चूर-चूर कर दिया है) का बड़ा ही सजीव चित्र उपस्थित किया है।*[9] यौन संबंधी विषयों और मानसिक कुंठाओं के कारण नई कविता अश्लीलता के पथ पर चलने लगी। भोग और वासना को नए कवियों ने सर्वोपरि समझते हुए नारी का चित्रण किया।अनामिका, रमणिका गुप्ता,नीलेश रघुवंशी,इंदु जैन,गगन गिल,मैत्री पुष्पा जैसी अधिकांश समकालीन कवयित्रियों ने मानसिक और शारीरिक उत्पीड़न झेलती नारी का मार्मिक और हृदयस्पर्शी चित्रण किया है। रघुवीर शरण जी 'भूमिजा' में सीता को त्यागने पर राम से प्रश्न करते हुए कहते है :-

राम! बताओ जग के शक पर क्यों सीता को त्यागा

टूटा करते हैं धनुष, टूटता नहीं ब्याह का धागा।।[10]

आधुनिक नारी अपने अधिकारों के प्रति जागरूक है। इस कारण वह किसी की अधीनता को स्वीकार नहीं करती जिसका चित्रण समकालीन काव्य में स्पष्ट होता है।अल्पसंख्यक और दलित समाज की नारियां आज भी पुरुष के उत्पीड़न का शिकार हो रही है।

संदर्भ ग्रंथ:-

1. **मनु,** मनुस्मृति,सं.पंडित रामेश्वर भट्ट,अध्याय-३, श्लोक-56,निर्णय सागर प्रेस मुंबई,सन् -1922,पृष्ठ सं.- 54

2. **गोरखनाथ**, गोरखनाथ वाणी,सं. पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल, पद-43, हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग द्वितीय संस्करण-सन् 1946, पृष्ठ सं.-137

3. **कबीरदास**,कबीर,सं.हजारी प्रसाद द्विवेदी, हिंदी ग्रंथ रत्नाकर, मुंबई, सन्-1942, पृष्ठ सं.- 243

www.ignited.in

4. **सं. हजारी प्रसाद द्विवेदी,** जायसी और उनका पद्मावत, पद्मावती नागमती सत्ती खंड, हिंदी साहित्य संसार, दिल्ली, सन्-1959 पृष्ठ सं.- 813

5. **डॉ उषा पांडे**,मध्ययुगीन हिंदी साहित्य में नारी भावना(शोध प्रबंध),हिंदी साहित्य संसार, दिल्ली, सन्-1989

6. **सूरदास**, सूरसागर प्रथम खंड, सं.नंददुलारे वाजपेयी, नवम स्कंध,नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, पृष्ठ सं.- 180

7. **डॉ. बच्चन सिंह,** रीतिकालीन कवियों की प्रेम व्यंजना, नागरी प्रचारिणी सभा,वाराणसी, सन्-1958, पृष्ठ सं.- 425

8. **सुभद्रा कुमारी चौहान,**विजयादशमी, वेबसाइट https://www.bharatdarshan.co.nz/index-amp.html

9. **बल्लभ दास तिवारी,**हिंदी काव्य में नारी(शोध प्रबंध),कांता प्रिंटिंग प्रेस, मथुरा, सन्-1974 पृष्ठ सं.- 634

10. **रघुवीर शरण मित्र**, भूमिजा, अरण्य रोदन, भारतीय साहित्य प्रकाशन, मेरठ,सन्-1961 पृष्ठ सं-22

Corresponding Author

Pawan Kumar*

J.C.D. College of Education, Sirsa